



A part of living a greener life is also educating others. The buzz word of the recent times is "Go Green to Save Earth". Earth has been a home to us for millions of years but now its resources are fast diminishing due to the carbon footprints (a measure of the human activities that are playing havoc on the earth). The oceans rising, glaciers shrinking, low lying coastal areas eroding and the very timing of the seasons changing is quiet startling. A world full of starved, sun-burnt, cancer stricken sounds scary. This is the kind of life that awaits us. If there was such a thing as global alarm bell, now would be an excellent time to ring it. Let's stop talking and writing about it only. It's time for us to do our bit and act as 'Defenders of the earth"

TEACHER FACILITATORS

Mr. Jagmohan Sharma, Ms. Kanchan Bhagat Ms. Surbhi Hajela, Ms. Shweta, Ms. Rajneet Mr. Mayank

Folk Song Competition (Boys) Il Prize

S. No.	NAME	CLASS
1.	Laksha Kumar	VI-B
2	Jagtar Singh	VI-C
3.	Ashmeet	Vr- C
4.	Yuvansh Sharma	VII - B
5.	Mayank Garg	VIII - C
6.	Yash Thakur	VIII - C
7.	Prince Kumar	DC - A
е.	Chimmaya Aggarwal	IX - B
9,	Parth Baluni	DX - B
10.	Hitesh Yadav	IX - C
11.	Lakshay Gupta	X - C
12.	Samarjeet Singh	XI - B
12.	Rohit Garg	XI - B
14.	Vansh Yadav	XI-B
15.	Oivyam Bhandari	XI - B
16.	Raunak Pal Singh	XI-C
17.	Arjun Singh Tyagi	XI-C
18.	Aditya Kala	XI - C
19.	Kanav Gosain	ж- c
20.	Varun Singh Chauhan	30 - C

ART ZONAL COMPETITION 2019- 20

DATE: 8.08.19

Sculpture Competition Jr. Boys Bhavya VII C III Position

DATE: 13.08.19

Drawing and Shading Competition Jr. Boys Harnek Singh VIII C III Position

Sculpture Competition Sr. Girls
Prabhjot Kaur IX C III Position

Papier Mache Sr. Girls Jasmeet Kaur IX C | Position

Poster Making Competition Jasmeet Kaur IX C III Position

Instrumental Zonal

in /
VII-B
on
X-B
Diff
XII - A

Sports Zonal

1. Basketball (Date: 1th to 5th Aug. 2019) (Girls)

Venue - St. Froebel Paschim Vihar

- Junior Girls III Position
- . Sub Junior Girls III Position
- 2. Basketball (Date: 6" to 9" Aug. 2019) (Boys)

Venue - St. Froebel Paschim Vihar

- Sub Junior Boys- III Position
- 3. Volleyball (Date: 20th to 23th Aug. 2019) (Girls) Venue-S.S.MOTA SINGH

- Senior Girls I Position
- Junior Girls III Position
- Sub Junior Girls- III Position
- 4. Handball (Date: 26" to 28" Aug. 2019) Girls

Venue- G.S.COED, B4 Paschim Vihar

- . Senior Girls- II Position
- Junior Girls- II Position



North District Taekwondo Championship 2019-2020

Org - NDTA (North District Taekwondo Association) Venue - Inderprastha World School, Paschim Vihar Date - 4" August 2019

Total Participants - 40 Medals -Gold - 15 Silver - 10 Bronze - 15



Taekwondo Zonal Competition

(Boys)
Venue - Richmond Global Public School
Date - 8" August 2019

Result - Sub Jr. Boys

S.No.	Name	Medal	Class	
1.	Prabhdeep Singh	Gold	VII - A	
2.	Rudra Singh	Gold	VIII - A	
3.	Aryan	Bronze	VI-B	
4.	Yashmeet Dhaiya	Bronze	VIII - C	

Result - Junior Boys

S.No.	Name	Medal	Class
1.	Manmeet Singh	Gold	IX - A
2.	Pratham Meena	Silver	VIII - C
3.	Jatin	Bronze	VIII - A
4.	Dhruv Singh	Bronze	IX -B

Taekwondo Zonal Competition

(Girls)
Venue – Co-ed S.S.S. B3 Paschim Vihar
Date – 6° August 2019, 26 August 2019

Result - Sub Jr. Girls

S.No.	Name	Medal	Class
1.	Prachi Rawat	Gold	VI-A
2.	Krisha Sehgal	Silver	VII - A
3.	Abhiroop Kaur	Bronze	VII - A

Result - Jr. Girls

S.No.	Name	Medal	Class
1.	Anshika Gupta	Bronze	VII - B
2.	Parminder Kaur	Bronze	VII - A





SCIENCE ZONAL

General Science Quiz, [16.8.19] (SKV Public School) Ill Position

S.No.	Name	Class
1.	Molik Arora	XI - A
2.	Namrata	XI - A
3.	Hashmeet Singh Saini	XI - A

National Children Science Congress, [19.8.19] (Govt. Co-ed Sarvodaya Vidyalaya, New Multan Nagar) I Position

S.No.	Name	Class
1.	Sambhav Arora	XI - A
2.	Parneet Singh	XI - A

Science Debate, [21.8.19] (Col. Mehar Little Angel School) III Position

S.No.	Name	Class
1.	Manreet Singh [FOR THE TOPIC]	XI - A

Science Seminar, [27.8.19] (Doon Public School) Il Position

S.No.	Name	Class
1.	Aryan Gupta	X-C

Zonal Level Science Exhibition, [7.9.19] (B-4, Govt. Co-ed School) I Position

S.No.	Name	Class
1.	Sambhav Arora	XI - A
2.	Molik Arora	XI-A



FIT INDIA MOVEMENT



















VISIT TO GANDHI SMRITI

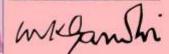


























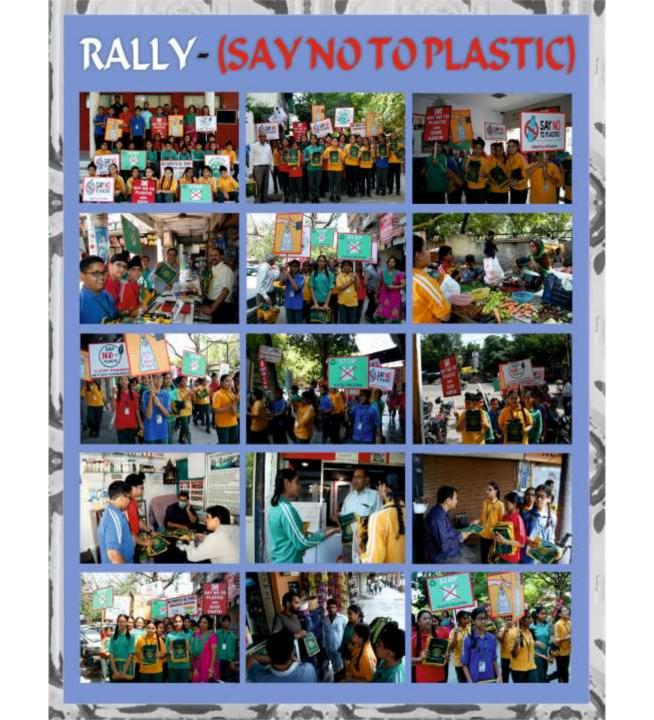






maganshi







UNSUNG HERO PRAKASH KAUR



The woman behind the Unique Home is Prakash Kaur, who was herself left on the streets as a baby 60 years ago. Since 1993, she has dedicated her life to the noble but onerous mission of rescuing unwanted and unclaimed newborn girls and giving them a secure home and future.

Today, 'Unique Home' for Girls has 60-odd residents who call Prakash Kaur mother.

"They are my own children," the lady says. "They are never made to feel like abandoned children."

She has touched the lives of many who've been cruelly shunned by their own. Siya was only a few hours old when she was found in a drain, wrapped in a black polythene bag. Reva was a new born when her parents decided to dump her near the highway off Kapurthala.

The girls now go to good English medium schools like Saint Mary's in Mussoorie. A few have since been married into suitable homes. Prakash Kaur has given them back the love and rights that these innocent girls were denied by their parents and society, just because of their gender.



गीता सार – अध्याय ग्यारह

श्रीमद् भगवद् गीता के दसवें अध्याय में हमने ऐश्वर्य पूर्ण योग—शक्ति के बारे में पढ़ा व जाना कि किस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को अपनी योग भित्त के बारे में ज्ञान दिया। ये सब जानकर अर्जुन को श्रीकृष्ण के विश्व रूप देखने की लालसा हुई, जिसके लिए उन्होंने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की। इसी को जानने के लिए ग्यारवें अध्याय में हम भगवान श्रीकृष्ण के विश्व रूप दर्शन के बारे में जानेगें।

ये सब जानकर अर्जुन बोले — मुझ पर कृपा करने के लिए आपने जो परम—गोपनीय आध्यात्मिक विषय का ज्ञान दिया है, उस उपदेश से मेरा मोह दूर हो गया है। हे कमलनयन! मैंने आपसे समस्त सृष्टि की उत्पत्ति तथा प्रलय और आपकी अविनाशी महिमा का वर्णन भी विस्तार से सुना है। हे परमेश्वर! इस प्रकार यह जैसा आपके द्वारा वर्णित आपका वास्तविक रूप है मैं वैसा ही देख रहा हूँ, किंतु हे पुरुषोत्तम! मैं आपके ऐश्वर्य युक्त रूप का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूँ। हे प्रमु! यदि आप उचित मानते हैं कि मैं आपके उस रूप को देखने में समर्थ हूँ, तब है योगेश्वर! आप कृप्या करके मुझे अपने उस अविनाशी विश्वरूप में दर्शन दीजिए।

श्रीकृष्ण बोले — हे पार्थ! अब तू मेरे सैकड़ों—हजारों अनेक प्रकार के रंगों वाली आकृतियों को भी देख। हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन! तुम मुझमें अदिति के बारह पुत्रों को, आठों वसुओं को, ग्यारह रुद्रों को, दोनों अश्विनी कुमारों को, उनचासों मरुत गणों को और इसके पहले कमी किसी के द्वारा न देखे हुए उन अनेकों आश्वर्यजनक रूपों को देख।

हे अर्जुन! तुम मेरे इस शरीर में एक स्थान में चर—अचर सृष्टि सहित संपूर्ण ब्रह्माण्ड को देख। किंतु तुम अपनी इन आँखों की दृष्टि से मेरे इस रूप को देखने में असमर्थ हो। इसके लिए मैं तुम्हें अलौकिक दृष्टि देता हूँ, जिससे तुम इसको देख पाओगे। इस विश्वरूप में अनेकों मुँह, अनेकों आँखें, अनेकों आश्चर्यजनक दिव्य आभूषणों से युक्त, अनेकों दिव्य—शस्त्रों को उठाए हुए, दिव्य मालाएँ, वस्त्र को घारण किए हुए दिव्य गंध का अनुलेपन किए हुए सभी प्रकार के आश्चर्यपूर्ण प्रकाश से युक्त, असीम और सभी दिशाओं में मुख किए हुए सर्वव्यापी परमेश्वर को अर्जुन ने देखा। यदि आकाश में एक हजार सूर्य एक साथ उदय हो तो उनसे उत्पन्न होने वाला वह प्रकाश भी सर्वव्यापी परमेश्वर के प्रकाश की शायद ही समानता कर सके। पाण्डुपुत्र अर्जुन ने उस समय अनेक प्रकार से अलग—अलग संपूर्ण ब्रह्माण्ड को सभी देवताओं के भगवान श्रीकृष्ण के उस शरीर में एक स्थान पर स्थित देखा। तब आश्चर्यचिकत, हर्ष से रोमांचित हुए शरीर से अर्जुन ने भगवान को सिर

झुकाकर प्रणाम करते हुए कहा कि मैं आपके शरीर में समस्त देवताओं को तथा अनेकों विशेष प्राणियों को एक साथ देख रहा हूँ और कमल के आसन पर स्थित ब्रह्मा जी को, शिव जी को, समस्त ऋषियों को और दिव्य सपों को भी देख रहा हूँ। हे विश्वेश्वर! मैं आपके शरीर में अनेकों हाथ, पेट, मुख और आँखें तथा चारों ओर से असंख्य रूपों को देख रहा हूँ। हे विश्वरूप! न तो मैं आपका अंत, न मध्य और न आदि को ही देख पा रहा हूँ। मैं आपको चारों ओर से मुकुट पहने हुए गदा धारण किए हुए और चक्र सहित अपार तेज से प्रकाशित देख रहा हूँ और आपके रूप को सभी ओर से अग्न के समान जलता हुआ, सूर्य के समान चकाचौंध करने वाले प्रकाश को कठिनता से देख पा रहा हूँ।

हे भगवन! आप ही जानने योग्य परब्रह्म परमात्मा है, आप ही इस जगत के परम—आधार है, आप ही अविनाशी सनातन धर्म के पालक है और मेरी समझ से ही आप ही अविनाशी सनातन धर्म के पालक है और मेरी समझ से ही आप ही अविनाशी सनातन पुरुष है। आप अनादि है, अनन्त है और मध्य रहित हैं। आपकी महिमा अनंत है। आपकी असंख्य भुजाएँ हैं, चंद्र और सूर्य आपकी आँखें हैं, मैं आपके मुख से जलती हुई अग्नि के निकलने वाले तेज के कारण इस संसार को तपते हुए देख रहा हूँ। आपके इस मयंकर आश्वर्यजनक रूप को देखकर तीनों लोक मयभीत हो रहे हैं। कुछ मयभीत होकर आपका गुणगान कर रहे हैं। सभी आपके इस रूप को देखकर मैं भी व्याकुल हो रहा हूँ।

हे विष्णु! आकाश को स्वर्श करता हुआ, अनेकों प्रकाशमान रंगों से युक्त मुख को फैलाए हुए और आपकी चमकती हुई बड़ी-बड़ी आँखों को देखकर मेरा मन भयभीत हो रहा है, मैं न तो धैर्य घारण कर पा रहा हूँ और न ही शांति को प्राप्त कर पा रहा हूँ। घृतराष्ट्र के सभी पुत्र, सारे वीर राजा, पितामह भीष्म, सूतपुत्र कर्ण और हमारे पक्ष के प्रधान योद्धा भी आपके मुख में तेज़ी से प्रवेश कर रहे हैं। हे सभी देवताओं में श्रेष्ठ! कृपा करके आप मुझे बतलाइए कि आप इतने भयानक रूप वाले कौन हैं ? मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप मुझ पर प्रसन्न हो। आप ही निश्चित रूप से आदि भगवान हैं, मैं आपको विशेष रूप से जानना चाहता हूँ। श्रीमगवान ने कहा – मैं इस संपूर्ण संसार को नष्ट करने वाला महाकाल हूँ। इस समय मैं सबको नाश करने के लिए लगा हुआ हूँ। यहाँ स्थित सभी विपक्षी पक्ष के योद्धा तेरे युद्ध न करने पर भी भविष्य में नहीं रहेगें। हे सव्यसाची! इसलिए तुम यश को प्राप्त करने के लिए युद्ध करने के लिए खड़े हो जाओ और शत्रुओं को जीतकर सुख संपन्न राज्य का भोग करो। ये सभी पहले ही मारे जा चुके हैं, तू तो युद्ध में केवल निमित्त बना रहेगा। ये बातें जानकर अर्जुन ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर अत्यंत मय से काँपता हुआ प्रणाम करके अवरुद्ध स्वर से भगवान श्रीकृष्ण से बोला। हे अन्तर्यामी प्रभू! यह उचित ही है कि आपके नाम के कीर्तन से संपूर्ण संसार अत्यंत हर्षित होकर आपके प्रति अनुरक्त हो रहा है। हे महात्मा यह सभी श्रेष्ठ जन आपको नमस्कार क्यों न करें क्योंकि आप ही ब्रह्मा को भी

उत्पन्न करने वाले हैं, हे अनंत! हे देवादिदेव! हे जगत के आश्रय! आप अविनाशी, समस्त कारणों के मूल कारण और आप ही परम तत्व हैं।आप वायु, यम, अग्नि, वरुण, चंद्रमा तथा सभी प्राणियों के पिता हैं। आपको बार—बार नमस्कार करता हूँ। आपको अपना मित्र मानकर मैंने हठपूर्वक आपको हे कृष्ण! हे यादव! हे सखा! इस प्रकार बिना जाने मूर्खता वश या प्रेमवश जो कुछ कहा है, हे अच्युत! यही नहीं अगर कभी गलती से भी मैंने आपका अनादर किया हो तो उन सभी अपराघों के लिए मैं क्षमा माँगता हूँ।

आप इस चल और अचल जगत के पिता हैं। तीनों लोकों में आपसे बढ़कर कोई नहीं है। आप मुझ पर प्रसन्न होकर अपने पुरुषोत्तम रूप को मुझे दिखलाइए। हे हजारों भुजाओं वाले विराट स्वरूप भगवान! मैं आपके मुकुट धारण किए हुए और हाथों में शंख, चक्र, गदा और पदम लिए रूप का दर्शन करना चाहता हूँ, कृपा करके आप चतुर्भुज रूप में प्रकट हों।

श्रीकृष्ण बोले — है अर्जुन! मैंने प्रसन्न होकर अपनी अंतरंग शक्ति के प्रभाव से तुम्हें अपना दिव्य विश्वरूप दिखाया है। जो कि पहले किसी और ने नहीं देखा है। हे परम मक्त! तू मेरे इस विकराल रूप को देखकर न तो अधिक विचलित हो और न ही मोहग्रस्त हो, अब तू पुनः सभी चिन्ताओं से मुक्त होकर प्रसन्नचित्त से मेरे इस चतुर्भुज रूप को देख। इसके साथ ही उन्होंने अपना विष्णु स्वरूप चतुर्भुज रूप को प्रकट किया और फिर दो भुजाओं वाले मनुष्य स्वरूप को प्रदर्शित करके मयभीत अर्जुन को धैर्य बँधाया। यह रूप देखकर अर्जुन ने कहा कि अब मैं स्थिर चित्त हो गया हूँ और अपनी स्वामाविक स्थित को प्राप्त हो गया हूँ। तब श्रीकृष्ण बोले कि हे अर्जुन! मेरे इस शाश्वत रूप के दर्शन की सभी आकांक्षा करते रहते हैं। मेरे इस चतुर्भुज रूप को न वेदों के अध्ययन से, न तपस्या से, न दान से और न यज्ञ से ही देखा जाना संभव है।

हे पाण्डुपुत्र! जो मनुष्य केवल मेरी शरण होकर मेरे ही लिए संपूर्ण कर्तव्य कर्मी को करता है, मेरी भक्ति में स्थित रहता है, सभी कामनाओं से मुक्त रहता है और समस्त प्राणियों से मैत्री भाव रखता है, वह मनुष्य निश्चित रूप से मुझे ही प्राप्त होता है।

इस प्रकार उपनिषद् ब्रह्मविद्या तथा योगशास्त्र रूप श्रीमद्भगवद्गीता के श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद में 'विश्वरूप दर्शन-योग' नाम का ग्यारहवाँ अध्याय संपूर्ण हुआ।

।। हरि ओं तत् सत्।।

आतकवाद

हाय! रे ये भयानक आतंकवाद. कर दिया तूने विश्व को बरबाद बेक्सूर, मासूमों को कर दिया तबाह, बस कहर ही कहर है सब जगह माँ से बिछ्ड़ा बालक फूट-फूटकर रोता है, उसे वह छोड़ गई देख दु:ख होता है। धर्म, जाति, संप्रदाय पड़ रहे हम पर भारी, चारों तरफ हो रही बस मौत की तैयारी द्वेष, ईर्ष्या की कैसी भडकी है चिंगारी दुश्मन मानवता का क्यों हुआ है मानव, करता है पूरे करतब जैसे हो दानव। कब ये हा-हा, ही-ही, त्राहि होगी दूर, कब तक हम बने रहे लाचार और मजबूर उठो मिलकर करो शक्ति का आह्वान दश्मनों को दिखा दो हम नहीं अनजान मिलकर प्रण करे नया विश्व बनाएँ उज्जवल, सुरक्षित कल सबको दे जाएँ सबको दे जाएँ





मेरी प्रिय अध्यापिका

घर छोड़ कर शुरु-शुरु में स्कूल चला जब आता था, खुशमीत कौर (X-B) माँ को याद कर कर के, मैं बहुत आँसू बहाता था, फिर प्यारी अध्यापिका ने प्यार से मुझको समझाया, में भी तो माँ जैसी ही हूँ, कहकर मुझको सहलाया, अपनी प्यारी शिक्षिका को, धन्यवाद चाहता हूँ कहना, आप हमेशा नन्हे-मुन्नों संग बस ऐसे ही रहना।

मनप्रीत सिंह (X-B)

WORKSHOPS

Table Manners- Class- VII

Students are usually taught about classroom behaviour, but societal mannerism is left behind. Such workshops help students to polish themselves in all aspects of personality development and enrichment.



Magic Show- Class- III

Students were mesmerised with the magical tricks of Mr. Davinder Singh Babbar, the resource person. Students enthusiastically interacted with him to know more about his tricks.



Attitudinal Changes- Class-V

Students were given a wholesome perspective on how one can improve his/her attitude towards others for good. Students got to learn something mature and responsible through the workshop.





Peer Pressure- Class- VIII

With the increasing pressures on students' tender minds, a workshop like this was able to hold their fancy to the fullest, Students whole heartedly engaged with the resource person's thoughts of personality challenges, addictions and young age pressures.



Mathematics can be fun-Class-VI

Mrs. Rekha Yadav stood true to the name of the workshop. Students were very impressed with the unique tricks that the resource person showcased them. They thoroughly enjoyed themselves.



Time Management- Class- VI

The resource person kept the students really engaged throughout the session with various interesting tips and tricks to manage and utilise our time more productively.

NEO CLUBS



COMPUTER CLUB



SPIC N SPAN CLUB



SCIENCE CLUB



COMMERCE CLUB



ENVIRONMENTAL CLUB



DRAMATICS CLUB



READER'S HIVE